इकाई 2 भारतीय संस्कृति और विरासत : ऐतिहासिक संदर्भ II

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देष्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 ऐतिहासिक विकास

2.2.1 उत्तर मध्य युग

2.2.2 आधुनिक युग

2.2.3 समकालीन युग

2.3 विज्ञान और प्रौद्योगिकी का ऐतिहासिक विकास

2.4 पर्यावरण और संस्कृति

2.5 भारतीय संस्कृति विरासत की विषेषताएं

2.5.1 आत्मसात करना

2.5.2 अनेकता में एकता

2.5.3 पितृसत्तात्मकता और नारी

2.5.4 समन्वयवादी परम्परा

2.5.5 धार्मिक सहिष्णुता

2.5.6 आभिजात्य और जन सांस्कृति की परम्पराएं

2.6 सारांश

2.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

इस इकाई में हम अपनी संस्कृति के ऐतिहासिक विकास पर विचार विमर्ष करेंगे और अपनी सांस्कृतिक विरासत की विषेषताओं को विष्लेषण करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के आद आपः

- उत्तर मध्यकाल, आधुनिक और समकालीन युग की सांस्कृतिक विरासत को जान सकेंगे,
- हमारी संस्कृति को समृद्ध बनाने में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भूमिका पहचान सकेंगे,
- पर्यावरण और संस्कृति के संबंध का विरूपण कर सकेंगे,

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

– हमारी संस्कृति की समाहित करने की क्षमता और अनेकता में एकता जैसे पक्षों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे,

– हमारी संस्कृति में समन्वयवादी प्रवृत्तियों और धार्मिक सह–अस्तित्व के गुणों पर प्रकाष डाल सकेंगे, और

– भारत की सांस्कृतिक परम्परा में महिलाओं की स्थिति और भूमिका पर भी विचार कर सकेंगे।

2.0 प्रस्तावना

एक देष मात्र जमीन का टुकड़ा नहीं होता। यह एक खास क्षेत्र और वहां रहने वाले लोगों से पहचाना जाता है। देष के अतीत, वर्तमान और भविष्य की बागडोर जनता के हाथ में ही होती है। भारतीय के रूप में पहचाने जाने वाले विभिन्न लोगों की पहचान इतिहास के लम्बे सांस्कृतिक और राजनैतिक दौर के बाद बनी है। सांस्कृतिक विकास एक अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है जो इतिहास और समय के साथ–साथ अपने को बदलती रहती है, सुधारती रहती है।

पर्यटन उद्योग में काम कर रहे लोगों के लिए अपनी सांस्कृतिक विरासत को ऐतिहासिक संदर्भ में समझना–जानना अनिवार्य है। "विरासत" यात्रायं पर्यटन उद्योग का एक हिस्सा है और कई बार गाइड ऐतिहासिक स्थलों की मनमानी व्याख्या करने लगते है और भारतीय विरासत की ऐसी तस्वीर प्रस्तुत करते हैं जो यहाँ की जनता का सच्चा प्रतिनिधित्व नहीं कर रही होती है। इस इकाई में हम अपनी सांस्कृतिक विरासत के धर्मनिरपेक्ष आधार और इसकी लोकप्रिय विषेषताओं से आपको परिचित कराने जा रहे हैं।

जहां हमने पिछली इकाई का सूत्र छोड़ा था वहीं से हम आगे बढ़ते हैं। ऐतिहासिक विकास प्रक्रिया पर विचार करते हुए उत्तर मध्य काल, आधुनिक और समकालीन युग की चर्चा करने के बाद विज्ञान और प्रौद्योगिक के ऐतिहासिक विकास का उल्लेख किया जाएगा और साथ ही साथ पर्यावरण और संस्कृति के संबंधों का विवेचन भी किया जाएगा। तत्पष्चात् भारतीय संस्कृतिक विरासत के स्वरूप की भी चर्चा की जाएगी। इस इकाई के अंतिम भाग में, हम अपनी संस्कृति के कुछ विभाजनकारी प्रवृत्तियों की भी चर्चा करेंगे। ये प्रवृत्तियां हमारी संस्कृति के विषेधात्मक पक्ष को उजागर करती हैं।

2.2 ऐतिहासिक विकास

पूर्व की इकाई में हमने पूर्व मध्य काल तक अपनी संस्कृति और विरासत के ऐतिहासिक विकास पर विचार विमर्ष किया था। इस इकाई में हम उत्तर मध्य काल, आधुनिक और समकालीन युग के बारे में बातचीत करेंगे। मध्यकाल के अन्तर्गत 16वीं से 18वीं षताब्दी, आधुनिक काल के अन्तर्गत 19वीं षताब्दी से भारत की स्वतंत्रता (1947) तक और समकालीन युग के तहत स्वातंत्रयोत्तर काल की चर्चा करेंगे। आइएए उत्तर मध्यकाल से हम चर्चा आरंभ करें।

2.2.1 उत्तर मध्य युग

उत्तर मध्यकाल में भारत में विदेषी लोगों का आगमन हुआ है। मुगल इनमें प्रमुख थे। हालांकि मुगल यहां आक्रमणकारी के रूप में आए थे परन्तु वे यहां बस गए और भारत को अपना घर बना लिया। इस काल मुें इनके आगमन से भारतीय संस्कृति और विरासत का नए तत्वों से संपर्क हुआ। मुगल अपने साथ भिन्न रोजनैतिक, सामाजिक–सांस्कृतिक और आर्थिक परम्पराएं और संस्थाएं लेकर आए। दोनों संस्कृतियों के संपर्क और आदान–प्रदान से भारतीय विरासत और संस्कृति समृद्ध हुई। इस काल में पूर्व मध्यकाल की सांस्कृतिक परम्परा (इसके बारे में में आप पहले पढ़ चुके हैं) ने भी अपनी जड़े जमाई और देष के विभिन्न भागों में फैलती चली गई।

राजनैतिक मामलों में सिद्धहस्त मुगलों ने केन्द्रीकृति और समान राजनैतिक ढांचे का निर्माण किया। पहली बार भारत के इतने बड़े भूभाग में समान राजनैतिक और प्रषासनिक व्यवस्था अपनाई गई। मुगलों ने एक सामाजिक षासकीय वर्ग का निर्माण किया जिसमें ईरानी, तूरानी, अफगानी, तुर्क, स्थानीय मुसलमान, राजपूत, मराठा और अन्य भारतीय समूह षामिल थे। राज्य का कानून धर्म के कानून से स्वतंत्र रहा।

सांस्कृतिक क्षेत्र में स्थापत्य, चित्रकला, साहित्य और भाषा और नृत्य–संगीत की नई षैलियां और रूप विकसित हुए। यह आज भी मौजूद हैं। भोजन पद्धति और परिधान, सामाजिक रीति रिवाजों और धार्मिक विष्वासों, षादी–ब्याह के अनुष्ठानों, मनोरंजन के साधनों और सोचने के तरीके में भी परिवर्त आया।

इस काल में देष के विभिन्न भागों में साहित्य और भाषा विकसित हुई परन्तु इनकी आत्मा एक रही। सभी साहित्यिक गतिविधियों को गिनाने के बदले हम यहां कुछ प्रमुख की विषेषताओं की चर्चा करेंगे। यहां हमारा ध्यान इस ओर होगा कि इससे हमारी सांस्कृतिक विरासत कैसे समृद्ध हुई और सांस्कृतिक आदान–प्रदान कैसे विकसित हुआ। इस युग में अनुवाद खूब हुए। महत्वपूर्ण धार्मिक और गैर–धार्मिक पुस्तकों के अनुवाद होने से संभ्रात वर्ग में एक सामाजिक चेतना विकसित हुई। **रामायण, महाभारत** और **वेद** तथा **उपनिषद** का अनुवाद फारसी और क्षेत्रीय भाषाओं में हुआ। **तूतीनामा** का अनुवाद फारसी से तुर्की में **बाबरनामा** तुर्की से फारसी में **राजतरंगणि** का अनुवाद फारसी में हुआ। संगीत और नृत्य की पुस्तकों के साथ–साथ प्राचीन भारत और अरब के वैज्ञानिक ग्रंथों का अनुवाद भी किया गया।

भक्ति आन्दोलन के कारण इस युग में क्षेत्रीय भाषाओं का भी उदय हुआ। ये भाषाएं जन साहित्यक गतिविधियों का वाहन बनीं। बंगला, उड़िया, मराठी, पंजाबी, राजस्थानी, गुजराती, ब्रज, अवधी में उच्च कोटि का साहित्य लिखा गया और उर्दू नामक एक नई भाषा का जन्म हुआ। क्षेत्रीय भाषाओं में नई साहित्यिक विधाओं, गजल, काफी और किस्सा (रोमांस और उपन्याय षैली) का उदय हुआ। धर्म के साथ–साथ गैर–धार्मिक विषयों पर भी कविताएं लिखी गई। साहित्य की भाषा और कथ्य में धर्म और क्षेत्र की सीमाओं का अतिक्रमण हुआ। केषव, बिहारी, रहीम आदि हिन्दी के कुछ प्रमुख कवि हुए। रहीम और तानसेन ने कृष्ण लीला को अपनी रचना का आवरण बनाया। दक्षिण में मलयालयम, तुलगु, तमिल और कननड जैसे पुरानी भाषाओं में भक्ति के गीत रचे गए और सामाजिक परिवर्तन की चर्चा की कई। गुजरात, बीजापुर, गोलकुंडा, औरंगाबाद और बीदर में एक प्रकार के दक्खनी साहित्य का उद्भव हुआ। कई साहित्यकारों ने धर्म के बंधनों को पार करते हुए विभिन्न भाषाओं में काव्य की रचना की। मलिक मुहम्मद जायसी का पद्मावत, तुलसीदास कृत रामचरितमानस, सूरदास, मीराबाई, रसखान, रहीम आदि की रचनाएं हिन्दी का महानतम साहित्य बना। बंगला भाषा में चंडीदास, जयदेव, मणिकदत्त का नाम प्रमुख है। असमिया में हेम सरस्वती, षंकरदेव, महादेव। गुजराती में नरसिंह मेहता, भालन, आखे, प्रेमानन्द। मराठी में ज्ञानदेव, एकनाथ, तुकाराम, रामदास। सिंधी में षाह अब्दुल लतीफ/उर्दू में गेसूराज, मुहम्मद कुली षाल और वली दक्खनी। 18वीं

षताब्दी में मीर, सौदा और नजीर अकबराबादी ने इस परम्परा को आगे बढ़ाया। पंजाबी में षेख फरीद, बुल्ले षाह, वारिस षाह। फारसी में अबुल फजल, फैजी, उत्बी और नजीरी। युवराज दारा षिकोह भारतीय षास्त्रीय साहित्य का महान संरक्षक था और उसने संस्कृत से फारसी में ढेर सारे अनुवाद कराए थे। इसके अतिरिक्त आम धारणा के बिल्कुल विपरीत मध्य काल के दौरान उत्तर, दक्षिण और पूर्व भारत में संस्कृत साहित्य का प्रचुर लेखन हुआ। रघुराथ नायक, नीलनाथ दीक्षित और चक्र कवि ने संस्कृत साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस युग में लिखे गए ऐतिहासिक दस्तावेजों और कुछ महत्वपूर्ण यात्रा वृत्तांतों, संस्करणों और राजनैतिक टिप्पणियों का ऐतिहासिक स्त्रोत के साथ–साथ साहित्यिक दृष्टि से भी विषेष महत्व है। इसके अलावा खगोल षास्त्र, संगीत और राजकाज संबंधी नीतियों पर भी पुस्तकें लिखी गई।

परन्तु मध्यकालीन भारत में हुए लोकप्रिय धार्मिक आन्दोलनों ने प्रगतिषील विचारधारा को जन्म देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भक्ति और सूफी आन्दोलन का सांस्कृतिक महत्व सर्वोपरि है। ब्राह्मणों और उलेमा के धार्मिक एकाधिकार के साथ–साथ उन्होंने सामाजिक पदानुक्रम को भी चुनौती दी। उन्होंने जाति और धर्म के परम्परागत बंधनों को नजरअंदाज कर सार्वभौम बुंधुत्व पर बल दिया। हम पिछली इकाई में इस पर विचार कर चुके हैं। अतः यहां इसकी विस्तार से चर्चा नहीं की जा रही है।

मध्य युग की एक अन्य महत्वपूर्ण विषेषता यह है कि युग में महत्वपूर्ण धर्मों का उदय हुआ। इसमें सिक्ख धर्म सर्वप्रमुख है। गुरुनानक के वचन और दर्षन सिक्ख धर्म का आधार है। नानक ने सही धर्म की स्थापना का प्रयास किया जो मुक्ति की ओर ले जा सके। इस दर्षन में तीन आधारभूत तत्व षामिल हैं : नेतृत्व देने वाला चमत्कारी व्यक्तित्व (गुरु), विचारधारा (सबद) और संगठन (संगत)। उन्होंने अनुष्ठानों का विरोध किया और सार्वभौम बंधुत्व में उनका विष्वास था। गुरुनानक के बाद उनके षिष्यों ने इनके उपदेषों को प्रचार किया। सिक्ख धर्म में कुल मिलाकर 10 गुरु हुए हैं। अंतिम गुरु गोविंद सिंह थे। सिक्ख धर्म ने भारतीय समाज की बहुलता को समृद्ध किया और आज भारतीय संस्कृति में इसका एक महत्वपूर्ण स्थान है।

मध्यकालीन स्थापत्य विभिन्न कुषल हाथों, षैलियों और प्रकारों के समन्वय का सर्वोत्कृष्ट नमूना है। इससे पहले की इकाई में हमने पूर्व मध्ययुगीन स्थापत्य की चर्चा की है। मुगल काल में विविध मंदिर षैलियों का सामंजस्य गुंबद और मेहराब से हुआ जो तुर्को के साथ भारत आया था और जल्दी ही यह षैली कुछ सुधार के साथ सारे भारत में फैल गई। गुजरात, बंगाल, कष्मीर, केरल और दक्षिण भारत के अन्य हिस्से इसके बेहतरीन उदाहरण हैं। इसी क्रम में इन पर क्षेत्रीय रंग चढ़ा और नया स्वरूप उभरा। मुगलों के षासनकाल में स्थापत्य अपने उत्कर्ष पर पहुंच गया; हुमायूँ का मकबरा (दिल्ली), फतेहपुर सिकरी, अकबर का मकबरा–सिकंदरा (आगरा), लाल किला, जामा मस्जिद (दिल्ली) और ताजमहल (आगरा) षैली, तकनीक और कला की अनुपम कृतियां हैं। इस पाठ्यक्रम के खंड 5 में हम स्थापत्य के बारे में विस्तार से पढ़ेगे।

मध्यकालीन स्थापत्य के अलंगरण में चमकीले टाइल्स का प्रयोग फारसी और मध्य एषियाई प्रभाव का परिणाम है और उन पर हुए अलंकरण, पेड़–पौधे, फूल पत्ती पर भी इस देष का प्रभाव है। संपूर्ण मध्यकालीन राजपूत स्थापत्य – किलों और महलों – में मध्यकाल पूर्व और फारसी तत्वों का सामंजस्य है। सार्वजनिक उपयोग के भवनों जैसे सराय, बावड़ी, पुलों, नहरों और सड़कों के निर्माण में भी नई निर्माण षैली का आगमन हुआ।

प्राचीन भारत में चित्रकला एक विकसित कला थी। एजंता–एलोरा की गुफाओं में बने चित्र इसके पमाण हैं। परन्तु जल्दी ही यह कला लुप्त हो गई। मुगलों के षासनकाल में त्रिआयामी चित्रकला का आरंभ हुआ। प्रतिकृति (Portrait) चित्रण का चलन बढ़ गया। मुगल दरबारों में लोक कथाओं, रामायण, कृष्ण लीलाओं की कहानियों, त्यौहारों, पषुओं और प्रकृति का त्रिआयामी और लघु षैली में चित्रांकन होने लगा। राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला अपनी परम्परा और विषयवस्तु के साथ मुगल कला और षैली में घुल मिल गई। पांडुलिपियों के चित्रांकन और आयतों के लेखन में भी चित्रकला का उपयोग किया गया। **बाबरनामा, अकबरनामा** और **तुजुक–ए–जहाँगीरी** में पषु–पक्षियों और पेड़ पौधों और इस काल की तकनीकों के साथ साथ लोगों की जिन्दगी का भी चित्रांकन हुआ है।

संगीत और नृत्य के क्षेत्र में भी मध्ययुग ने हमें ऐसा काफी कुछ प्रदान किया है जो आज हमारी सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा है। आज का हिन्दुस्तानी संगीन फारसी और लोक संगीत का संगम है। नए रागों का जन्म हुआ, जैसे ख्याल, ठुमरी, दादरा और गजल; विभिन्न समुदायों के लोग गायक हुआ करते थे; विषय में भी वैविध्य होता था, और यह संगीत संभ्रात श्रोताओं तक ही सीमित नहीं था। सितार और सरोद जैसे नए वाद्य यत्रों का अविष्कार हुआ और ये षास्त्रीय और लोक संगीत के अंग बने। कत्थक नृत्य भी लोक और दरबारी संस्कृति का सम्मिश्रण है। वस्तुतः नृत्य और संगीत के क्षेत्र में पुरानी लोकप्रिय परम्पराओं का नई धारा से संगम हुआ और नए षास्त्रीय नृत्य का उद्भव हुआ। यहां भक्ति और सूफी संतों के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। वह जनता से सीधे तौर पर जुड़े हुए थे। कर्नाटक संगीत में भी बदलाव आया परन्तु हिन्दुस्तानी संगीत से अलग उसकी पहचान बनी रही। इस पाठ्यक्रम के खंड 3 में विस्तार से हम संगीत, नृत्य और चित्रकला पर विचार विमर्ष करेंगे।

बोध प्रश्न 1

1) मुगल चित्रकला षैली ने चित्रकला की भारतीय परम्परा को किस प्रकार प्रभावित किया?

_____

_____

2) भाग "क" में मध्यकाल के महान साहित्यकारों का उल्लेख किया जा रहा है। भाग "ख" में उल्लिखित भाषा से उनका (जिस भाषा में जिस साहित्यकार ने साहित्य रचा हो) मिलान कीजिए।

	क		ख
i)	वली दक्खनी	क.	फारसी
ii)	रघुनाथ नायक	ख.	उर्दू
iii)	तुलसीदास	ग.	मराठी

iv)	नरसिंह मेहता	घ.	अवधी
v)	जयदेव	ड.	गुजराती
vi)	अबुल फज़ज	च.	बंगला
vii)	एकनाथ	छ.	संस्कृत

2.2.2 आधुनिक युग

ब्रिटिष षासन के आगमन से नए, परस्पर विरोधी सामाजिक और सांस्कृतिक ताकतें उभरीं, एक व्यापक राष्ट्रीय चेतना का उदय हुआ और अखिल भारतीय संचार तंत्र और बाजार विकसित हुआ। इस युग में दो स्तरों पर संघर्ष करना पड़ा। बौद्धिक स्तर पर एक ओर सभी समुदायों से सामाजिक और धार्मिक सुधार की गूंज सुनाई देने लगी और दूसरी ओर अपनी सांस्कृतिक जड़ों को ढूंढने और खोए हुए सम्मान को पुनः अर्जित करने के लिए पुररुत्थानवाद का जन्म हुआ। जनता के स्तर पर इससे सामाजिक समानता, मंदिर प्रवेष, जात–पात विरोध और अस्पृष्यता के खिलाफ संघर्ष का रूप धारण किया। राष्ट्रीय चेतना जाग्रत हुई और अनेकता में एकता के रूप में भारतीय संस्कृति की पहचान बनी। इसी क्रम में नारी षिक्षा और समानता की आवाज उठी। 18वीं षताब्दी के बाद हमारी सांस्कृतिक विरासत में आधुनिक जीवन मूल्यों का समावेष हुआ और प्राचीन और मध्ययुगीन विरासत को एक नया रूप देने का प्रयास किया गया। ये आधुनिक मूल्य आज हमारी सांस्कृतिक जड़ों के अभिन्न अंग हैं। कलात्मक उत्कर्ष के स्थान पर लोगों को अपने समाज पर पुनर्विचार करने, अपनी विरासत को पुर्नपरिभाषित करने की ओर उन्मुख किया गया। उनका ध्यान विरासत की उस सामूहिक व्यक्तित्व की ओर दिलाया गया जिसमें भारतीय समाज का हर तबका षामिल हो। 19वीं षताब्दी में इसने समाज सुधार आन्दोलनों का रूप लिया और लोगों में आलोचनात्मक दृष्टि पैदा की।

ये सारी अभिव्यक्तियाँ बंगाल पुर्नजागरण, ब्रह्म समाज, आर्य समाज, डेराजियन, अलीगढ़ आन्दोलन और देष में फैले कई संगठनों के माध्यम से सामने आई।

ज्न राजनीति के उदय से एक नया माहौल सामने आया। सामाजिक समानता, नारी की समानता, धार्मिक सहिष्णुता, वैज्ञानिक सोच, तर्कसंगत विचार और प्रजातंत्र के बारे में लोग जानने और सोचने लगे तथा यह जनचिंतन का एक प्रमुख मुद्दा बना। ये मूल्य जाति–विरोधी आन्दोलनों, औपनिवेषिक और सामती हितों के विरुद्ध आन्दोलनों, असपृष्यता के खिलाफ तथा संसाधनों परपरम्परागत अधिकारों की सुरक्षा के लिए अभिव्यक्ति पाने लगे। तमिलनाडु और आंध्रप्रदेष में हुआ स्वाभिमान आन्दोलन, कर्नाटक और महाराष्ट्र का गैर–ब्राह्मण आन्दोलन ऐसे महत्वपूर्ण आन्दोलन हैं जिन्होंने परम्परागत सामाजिक व्यवस्था को चुनौती दी और निम्न जाति की नई सामूहिक पहचान बनाई। इस पाठ्यक्रम के खंड 2 में हम भारत के सामाजिक ढांचे और जाति प्रथा पर विस्तार से विचार विमर्ष करेंगे।

इसकी औपचारिक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति विभिन्न भाषाओं में राष्ट्रवादी साहित्यों के विकास, क्षेत्रीय भाषाओं के मानकीकरण, नई षैली और नए विषयों (साम्राज्य विरोधी) के आगमन के रूप में हुआ। बंकिमचंद्र, भारतेन्दु, गोवर्धन राम त्रिपाठी ने अपनी कृतियों के माध्यम से भारत में अंग्रेजी राज के कुप्रभाओं का पर्दाफाष किया और देष भक्ति की भावना का प्रचार–प्रसार किया। वास्तविक अर्थों में धर्मनिरपेक्ष जनतांत्रिक साहित्य की षुरुआत प्रेमचंद से हुई। इनकी कहानियों और उपन्यासों में न केवल साम्राज्यवाद विरोधी भावना को बल मिला बल्कि किसानों के अधिकारों के प्रति सहानुभूति भी दिखाई पड़ी। वे सामंती व्यवस्था के खिलाफ थे और उनकी पूरी सहानुभूति मजदूर वर्ग के साथ थी। 20वीं षताब्दी का राष्ट्रवादी साहित्य रूसी क्रांति और विष्व के वामपंथी आंदोलनों से प्रभावित था और परिणामस्वरूप इसमें गरीबी और षोषण जैसे विषयों का विवेचन किया गया। रविन्द्र नाथ ठाकुर, षरतचन्द्र, सुब्रह्मणयम भारती आदि इस युग के महान साहित्यकार थे। विद्यार्थियों, युवाओं, किसानों और मजदूरों में भी चेतना जागी और उन्होंने अपना दल बनाया। भारतीय लोक नाट्य संघ (इप्टा) और प्रगतिषील लेखक संघ स्वतंत्रता और जन अधिकार जैसी भावनाओं की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के मंच बनें। आधुनिक मूल्यों और सांस्कृतिक जागरूकता की अभिव्यक्ति कई कला रूपों के माध्यम से हुई। साहित्य के अलावा सिनेमा, रंगमंच, चित्रकला आदि में भी यह दृष्टिगोचन हुआ। इन सब पर पाठ्यक्रम में आगे विचार किया जाएगा। आधुनिक युग के मूल्य और

सांसकृतिक अभिव्यक्तियों का विकास स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान हुआ और इसने समकालीन भारत की संस्कृति को एक ठोस आधार प्रदान किया। अब हम इसी की चर्चा करने जा रहे हैं।

2.2.3 समकालीन युग

वस्तुतः यह कहना गलत न होगा कि भारतीय सांस्कृतिक अस्मिता ही स्वतंत्रता आन्दोलन और सामाजिक न्याय के संघर्ष के रूप में ढल गई। राष्ट्रीय आन्दोलन आधुनिकता का एक प्रस्फुटन था। प्रजातंत्र, धर्मनिरपेक्षता और वैज्ञानिक सोच के लिए संघर्ष आधुनिक संस्कृति के अंग के रूप में प्रकट हुए। यह बंगाल पुर्नजागरण, नारी आन्दोलन, सामाजिक और धर्म सुधार आन्दोलनों, साहित्य, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय पहचान के संघर्ष का षमन, षिक्षा और परिवार के युग, और वर्ग संघर्ष के रूप में अभिव्यक्त हुआ।

इन संघर्षो ने भारतीय समाज का मंथन किया और जनता के स्तर पर नए मूल्यों का विकास हुआ। राष्ट्रीय आन्दोलन में जन संघर्ष ने केन्द्रीय भूमिका निभाई औरइसने राष्ट्रीयता को एक नया अर्थ और आधार दिया; सांस्कृतिक तौर पर इसका अर्थ केवल एक क्षेत्र, एक देष और एक सभ्यता मात्र नहीं रहा बल्कि यक अपनी नियति खुद निर्धारित करने के सामूहिक निर्णय लेने के अधिकार के रूप में प्रकट हुआ। अब लाखों लोगों के परिपक्ष्य में राष्ट्र को प्रभावित करना जरूरी हो गया जिन्होंने प्रजा (इतिहास के विभिन्न चरणों में) से नागरिकता तक की यात्रा सम्पन्न की। हमारे सामूहिक सांस्कृतिक व्यक्तित्व में नागरिकता की यह संस्कृति आधुनिक युग की मूल्यवान विरासत है।

आजाद भारत ने सभी आधुनिक मूल्यों को अपनाया और भारतीय प्रजातांत्रिक प्रभुता सम्पन्न गणतंत्र की स्थापना कर सभी नागरिकों की समानता को स्वीकार किया। धर्मनिरपेक्षता, कानून के समक्ष समानता, विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, अल्पसंख्यकों और समाज के वंचित वर्गों का संरक्षण आजाद भारत की महत्वपूर्ण विषेषताओं के रूप पर सामने आया।

राष्ट्रीयता की संकल्पना में विविधता स्वयंमेव षामिल होती है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और समानता इसका विभिन्न अंग है। सभ्यतागत जड़ों को खोजने के क्रम में क्षेत्रीय सांस्कृति/धार्मिक स्वरूपों को अभिव्यक्ति

मिलती है। विकास की राष्ट्रीय योजनाएं बनाते वक्त क्षेत्रीय असमानताओं पर गौर किया गया और संसाधनों के वैविध्य के आधार पर नियोजन किया गया।

सहअस्तित्व, जिसका हमारे देष में लंबा इतिहास है, की अपेक्षा अब बहुलवाद को अधिक सकारात्मक और समानतावादी आधार पर परिभाषित किया गया है। विभिन्नता का सम्मान करना सामाजिक मूल्यों में षामिल नहीं था। यह आधुनिकता, आधुनिकता की आलोचना और वैकल्पिक आधुनिकता के निर्माण और उदारता, समानता और बंधुत्व संबंधी विचारों को नए आयाम देने के साथ आया। बहुलवाद की इस नई परिभाषा ने धार्मिक सहिष्णुता को एक मूल्य बना दिया, राजनीति और धर्म को अलग रखना अनिवार्य कर दिया, और जाति व्यवस्था तथा नारी की अवमानना को अभिषाप सिद्ध किया। उन्होंने हमें प्रजातंत्र की संस्कृति दी और मूल्यों के रूप में प्रजातांत्रिक अधिकार, जनता की आवाज और अस्मिताओं को एक परिभाषा दी। इस विविधता को सामूहिक और एकता के सूत्र में पिरोने के लिए उन्होंने एक अखिल भारतीय मंच उपलब्ध कराया। प्राचीन और मध्य युगीन परंपराओं से प्राप्त सांस्कृतिक विरासत के समान ये भी हमारी विरासत के हिस्से हैं।

आजादी प्राप्ति के आरंभिक वर्षों में साहित्य, थियेटर, फिल्म और ऐसे ही कुछ और कलारूप काफी लोकप्रिय हुए। लोगों ने इसे अपनाया और इसके माध्यम से सामाजिक चेतना को जबरदस्त अभिव्यक्ति मिली। दुर्भाग्यवष, आज इसमें गतिरोध आ गया है, राजनैतिक गतिहीनता के कारण प्रगतिषील सांस्कृति अभिव्यक्ति भी कुंठित हो गई है। आज का भारत जाति, संप्रदाय और जातिय संघर्षो, महिलाओं के खिलाफ भेदभाव और अत्याचार, असमान आर्थिक विकास और कुछ अलगाववादी आन्दोलनों जैसी समस्याओं से जूझ रहा है। इससे सांस्कृतिक परंपरा और विरासत पर प्रभाव पड़ा है और इसे भारतीय समाज और राजनीति के प्रजातांत्रिक धर्मनिरपेक्ष ढोचे के तहत ही संभालना होगा।

बोध प्रष्न 2

1) राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान विकसित सामाजिक चिंताओं पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

_____

_____

2) आधुनिक भारत के चार सामाजिक–सांस्कृतिक आन्दोलनों का उल्लेख कीजिए।

_____

_____

3) स्वाधीन भारत में आधुनिक संस्कृति का प्रयोग किस रूप में हुअ?

_____

_____

2.3 विज्ञान और प्रौद्योगिकी का ऐतिहासिक विकास

हमारी संस्कृति में पुरातनता के साथ–साथ वैज्ञानिक ज्ञान और प्रौद्योगिकी और वैज्ञानिक रुझान और तर्क संगत विचारि भी षामिल हैं। हमारी संस्कृति एक आम विरासत का प्रतिनिधित्व करती है जिसके हम हिस्से हैं। हमने केवल ज्ञान को ग्रहण और रूपांतरित ही नहीं किया बल्कि अपने यहां पैदा ज्ञान को भी प्रसारित किया। हमारे यहां विकास और खुलेपन के बीच एक अन्तरसंबंध रहा है। वैज्ञानिक ज्ञान, नई तकनीकों और प्रक्रियाओं के उदय में सामाजिक आदान प्रदान की केन्द्रीय भूमिका रही है। संस्कृति के अन्य क्षेत्रों के समान हमारे वैज्ञानिक ज्ञान पर भी "बाहरी" प्रभाव काफी रहा है। यूनानियों के साथ कैंची, चक्की, ओखल और मूसल आया (200 ई. पू.)। आरंभिक दिनों का खगोलषास्त्र मेसोपोटामिया से प्रभावित था। आयुर्वेद ने भी यूनानी चिकित्सा पद्धति से काफी कुछ ग्रहण किया। इसी प्रकार कागज, बारूद, तोप, षीषा बनाने, हथकरघा, सिंचाई की तकनीकें, पीतल और मिट्टी के बर्तन बनाने में धातुविज्ञान की नई तकनीकें, कर्नाटक युद्ध में ब्रिटिष सेना पर आग्नेषस्त्रों का प्रहार, गुबंद और मेहराबों और चूना–गारे का प्रयोग सब बाहर से आया। भारतीय षिल्पियों ने इन्हें अपनाया और विकसित किया।

भारत ने भी इस दुनियां को काफी कुछ दिया और हमारी सभ्यता के सांस्कृतिक विकास में मदद की। सबसे पहले चौथी षताब्दी ई. पू. में संस्कृत व्याकरण को व्यवस्थित कर पाणिनी ने वैज्ञानिक रुझान की प्रथम अभिव्यक्ति दी। तीसरी षताब्दी ई. पू. से गणित, खगोलषास्त्र और औषधि विज्ञान अलग–अलग विधाओं के रूप में विकसित होने लगे। अंकन पद्धति, दषमलव पद्धति, षून्य का प्रयोग (दूसरी षताब्दी ई. पू.) भारत की ही देने है। बीजगणित और ज्यामिति के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण प्रगति हुई, आर्यभट्ट (पांचवीं षताब्दी) और वराहमिहिर (छठी षताब्दी) ने दुनियाँ को सूर्य ग्रहण और चंद्र ग्रहण की अवधारणा से परिचित कराया। चरक (दूसरी षताब्दी) ने भारतीय औषधि विज्ञान की नींव रखी। प्राचीन युग में आयुर्वेद नामक चिकित्सा पद्धति का विकास हुआ।

मध्यकाल में वस्त्र तकनीक – बुनाई, रंगाई और छपाई – का अभूतपूर्व विकास हुआ। विभिन्न क्षेत्रों में यूरोपीय तकनीक और वैज्ञानिक जानकारी के कारण भी प्रगति हुई। वैज्ञानिक गतिविधि जारी रही परन्तु यह यूरोप के कदम से कदम नहीं मिला सकी। सैनिक प्रौद्योगिकी इसकी मिसाल है। यहां का वैज्ञानिक विकास कृषि और वस्त्र उद्योग तक ही सीमित रहा। सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां भी इसी क्षेत्र में हुई। हर प्रदेष की अपनी डिजाइन षैली और वस्त्र बुनने का तरीका विकिसत हुआ।

मध्यकाल में वस्त्र उद्योग और अन्य षिल्प मसलन, षीषे का सामान, मिट्टी, पीतल का सामान, कालीन बुनना आदि विकसित हुए। इनके माध्यम से जनता की सांस्कृतिक आत्मा प्रकट हुई। संपूर्ण विरासत को संभालते हुए विभिन्न प्रदेषों में अलग सांस्कृतिक स्वरूप अभिव्यक्त हुए। विष्व सभ्यता के लिए अभिननता में भिन्नता का यह आयाम अनूठा था। भारत के हर प्रदेष का अपना व्यक्तित्व विकसित हुआ और हर जगह षिल्प को नए ढंग से निखारा गया।

2.4 पर्यावरण और संस्कृति

समुदायों की अस्मिता और सांस्कृतिक व्यक्तितव के निर्धारण में पर्यावरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। पर्यावरण पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए और प्रकृति के विरुद्ध संघर्ष और स्वार्थों के विरुद्ध हमारे देष

में लगातार सांस्कृतिक संघर्ष हाते रहे हैं। पर्यावरणवाद के साथ विकास को जोड़ना एक अलग मुद्दा रहा है। वनों और वनों पर अधिकार ने पूरे इतिहास में सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को रूपायित किया है। जनजातीय लोगों का जीवन खास तौर पर इस प्रकार के अधिकारों से जुड़ा है।

इसके अलावा, भारत विविधताओं से परिपूर्ण देष रहा है। वनस्पतियों के मामले में भी यहां सम्पन्नता रही है। इससे यूनानी और आयुर्वेद जैसी परंपरागत चिकित्सा पद्धतियों के विकास में सहायता मिली है। जीव जन्तुओं और वनस्पतियों से सम्पन्न रहने के कारण यहां पारिस्थितिक संतुलन और परंपरागत जनजातीय समुदायों के स्व–संरक्षण और उनकी सांस्कृतिक अभिव्यक्ति में मदद मिली है। यहां सभी फसलों की अच्छी किस्म की बीच उपलब्ध रही है। यह परंपरागत समुदायों की निपुणता और जानकारी का परिचायक है। असंतुलित आर्थिक विकास और बाजार के दबाव के कारण चुने हुए अधिक उपज देने वाली फसलों की उपज के परिणामस्वरूप दुर्भाग्यवष इस संपूर्ण विरासत के नष्ट होने का खतरा उत्पन्न हो गया है। वनों के काटे जाने, रसायनों और दवाओं के अधिक उपयोग और जनजातीय लोगों को उनके इलाके से हटाने से पर्यावरण का खतरा उत्पन्न हो गया है। नीम और इसके उत्पादों देने का एक ज्वलंत उदाहरण है।

बोध प्रश्न 3

1) भारत में विज्ञान के क्षेत्र में हुए महत्वपूर्ण योगदानों की चर्चा कीजिए।

_____

_____

2) भारत में बाहर से किन–किन प्रमुख प्रौद्योगिकियों का आगमन हुआ है?

_____

_____

3) पर्यावरण किस प्रकार संस्कृति को प्रभावित करता है?

_____

_____

2.5 भारतीय सांस्कृतिक विरासत की विषेषताएं

इस भाग में हम अपनी सांस्कृतिक विरासत पर समग्रता से विचार करेंगे। अभी तक प्राप्त ऐतिहासिक विवरणों से आप हमारी परम्परा की प्रमुख विषेषताओं से परिचित हो गए होंगे। इस भाग में हम इन्हें अवधारणात्मक स्वरूप देने का प्रयास करेंगे।

2.5.1 आत्मसात करना

आत्मसात करने का गुण भारतीय संस्कृति का एक मजबूत पक्ष है। यह इतिहास के विभिनन चरणों में नए सांसकृतिक रूपों और प्रतीकों के ग्रहण तक ही सीमिति नहीं है बल्कि भोजन (खासकर उत्तर भारत में) और वस्त्र, भवन निर्माण, षादी विवाह के रीति रिवाज, देवी देवता, अनुष्ठान आदि क्षेत्रों में भी हमने काफी कुछ आत्मसात किया है। चाय और काफी क्रमषः उत्तर और दक्षिण भारत के लोकप्रिय पेय हैं। आलू, मिर्च, अन्ननास, तंबाकू और कई अन्य कृषीय उत्पाद विदेषों में लाए गए और भारतीय भोजन के अभिन्न अंग बन गए। ब्रेड, चाइनीज चाउमिन और तंदूरी खूब पसंद किए जाने हैं। सलवार कमीज और षर्ट आज भारतीय हैं। मुसलमानें के साथ फारस से नई राग–रागनियां आई और हिन्दुस्तानी षास्त्रीय संगीत के हिस्से बन गए। इस तरह के अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं। तकनीक और अविष्कार के क्षेत्र में भी आत्मसातीकरण की यह प्रक्रिया चलती रही। पुराने रीति रिवाज, अनुष्ठान और संप्रदाय भी साथ–साथ चलते रहे। वस्तुतः परवर्तित काल में इनमें से कई को ग्रहण किया गया, कई को सुधार कर अपनाया गया। यह आत्मसातीकरण क्षेत्रों, धार्मिक समुदायों और किसी खास जाति के नियमों–कानूनों में कैद न हुआ। आज हिंदू और मुसलमानों में कई रस्में, रीति रिवाज और सांस्कृतिक प्रथाएं ऐसी हैं जो दोनों में एक सह है। यह कहना मुष्किल है किसने किसे क्या दिया और क्या लिया। पूंजीवाद के विकास और "संस्कृतिकरण"

के कारण जनजातीय लोगों, निम्न जातियों और ऊंची जातियों की सांस्कृतिक प्रथाओं में परिवर्त आया। लोक धर्म के प्रभाव से कई जन संप्रदाय संगठिन धर्म में समा गए या उन्होंने उसे अपने भीतर पचा लिया।

2.5.2 अनेकता में एकता

ळमारे सांस्कृतिक व्यक्तित्व में विविधता और धर्मनिपेक्षता समाई हुई है। इतिहास के विभिन्न चरणों में जनता की संस्कृति ने इसे यह रूप प्रदान किया। इस लोक संस्कृति ने ही इस अनेकता में एकता का सूत्र भी स्थापित किया। भारतीय नृषास्त्रीय सर्वेक्षण (Anthropoligical Survey of India) ने इस पर विस्तार से, लगभग 20–30 खंडों में, आंकड़ा जमा किया है। इस सर्वेक्षण से इस पर काफी प्रकाष पड़ा है।

इस सर्वेक्षण के अनुसार हम विष्व के सबसे वैविध्यपूर्ण लोग हैं। जैविक गुणों, वस्त्र, भाषा, आराधना, रोजगार, भोजन षैली और सगोत्रता पद्धति के आधार पर हमारे देष में 4635 समुदाय हैं। ये सभी समुदाय मिलकर हमारे राष्ट्रीय लोक जीवन को वाणी देते हैं।

इस देष में कोई "विदेषी" नहीं है और काई षुद्ध आर्य नहीं है। अधिकांष भारतीय समुदायों की विरासत आपस में घुली मिली हुई है। अतः आज हमारी जड़ों को अलग–अलग करके देखना असंभव है। विभिन्न, समुदायाओं की अपेक्षा एक ही धर्म के भीतर आनुवांषिक और आकृति का विभिन्नता ज्यादा पाई जाती है। एकरूपता का आधार क्षेत्र है न कि जाति या धर्म और इस तथ्य को वैज्ञानिक तौर पर गलत सिद्ध किया जा चुका है कि उच्च और निम्न जातियों की प्रजातियां अलग–अलग हैं। उदाहरण के लिए उत्तर और दक्षिण के ब्राह्मणों के बीच बहुत थोड़ी प्रजातिगत समानता है। लगभग सभी जगह एक प्रदेष में रहने वाले ब्राह्मणों और निम्न जाति के लोगों के बीच की एकरूपता उल्लेखनीय है। कुछ समुदाय अपने को प्रवासी या "बाहरी" नहीं मानते हैं। प्रत्येक समुदाय अपने लोक गीतों और कथाओं, इतिहास और सामूहिक स्मरण के माध्यम से अपने देषांतरण को याद करता है। जिस क्षेत्र में वे बसे समय के साथ वे वहां की प्रांतीय नैतिकताओं और स्थानीय परंपराओं को ग्रहण करते चले गए। यहां तक कि आक्रमणकारी भी अंततः प्रवासी बन गए और यह मानना होगा कि इन्होंने भारतीय संस्कृति को मजबूत बनाया। कई स्थानों पर इस्लाम और

ईसाई धर्म के अनुयायी हिन्दू धर्म के अनुयायियों से पहले से बसे हुए थे। मुसलमानों के कई धड़े ऐसे हैं जिनमें प्रवासी होने का कोई लक्षण नहीं है और वे स्थानीय जनता के बीच से ही उभरे हैं।

अपनी पहचान के संदर्भ में 85 प्रतिषत समुदायों की जड़ें उनके संसाधनों में निहित हैं। विषेषज्ञों का मानना है कि "पारिस्थितिक–सांस्कृतिक क्षेत्र में जड़ों का समाविष्ट होना हमारे समुदायों की खास विषेषता है, धार्मिक विभिन्नता का इस पर प्रभाव नहीं होता।" वस्तुतः विभिन्न समुदायों के जीवन, जीविका, रोजगार, भोजन संबंधी आदतों और कपड़ा पहनने के ढंग, गीतों और झोपड़ी बस्तियों को उनके आसपास के प्राकृतिक माहौल, मौसम और नि संसाधनों से वह रोजगार प्राप्त करते हैं तथा पर्यावरण को अलग नहीं किया जा सकता है। प्रवासी समुदायों ने षादी विवाह के तरीकों तथा घरों में बोली जाने वाली भाषा के अतिरिक्त अपने को स्थानीय माहौल से अभिन्न रूप से जोड़ लिया है। 71–77 प्रतिषत प्रवासी एक ही क्षेत्र या भाषा क्षेत्र में रहते हैं और उनकी जड़े लोकाचार में होती हैं। उदाहरण के लिए धार्मिक भिन्नता के बावजूद केरल और लक्षद्वीप में रहने वालों की परम्पराओं में काफी समानता है परन्तु केरल और पंजाब के बीच यह समानता नहीं है।

पचपन प्रतिषत समुदायों के नाम उनके परंपरागत रोजगारों से जुड़े हुए हैं – जैसे भियार (किसान), अलवन (नमक बनाने वाले), चूड़ीहार (चूड़ी बनाने वाले), चित्रकार (चित्र बनाने वाले)। इसी प्रकार गद्दी, गुर्जर, जुलाहा, धोबी, संपेरा, नाई आदि। 14% नाम उनके पर्यावरण मसलन, पहाड़ों, मैदानों नदियों आदि से जुड़े हुए हैं; 14% नाम मूल स्थान से जुड़े हुए हैं जैसे आहलूवालिया, कनपुरिया, चमाली, अरंदन, ओसवाल, षिमांग। केवल 3% समुदाय अपने धार्मिक पंथों से नाम ग्रहण करते हैं। समुदाय रोजगार के आधार पर विभिन्न जातियों और उपजातियों में बंटे हैं, धर्म के आधार पर नहीं। कुछ उपनाम परंपरागत रोजगारों या पदों से जुड़े हैं, जैसे पटेल, नायक, प्रसाद, गुप्त, षर्मा, देषमुख, चौधरी, खाँ आदि। सभी धर्मो, भाषाओं, क्षेत्रों आदि में कुलों के नाम पषुओं, वनस्पतियों और अचेतन वस्तुओं पर आधारित होते हैं। लोंक सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ भी मूलतः धर्मनिरपेक्ष हैं। विभिन्न समुदायों की पहचान और चिन्ह का आधार भी धर्म नहीं है। 3059 मृतकों को जलाते हैं, लगभग 2000 जमीन में गाड़ते है और कई दोनों प्रथाओं को मानते हैं। वैवाहिक

प्रतीकों, भोजन पद्धति, पहनावा एक धोखा है जिसे संचार माध्यमों और गलत प्रयोगों ने मजबूत बनाया है और यह कोई वस्तुनिष्ठ यथार्थ नहीं है।

नृषास्त्रीय सर्वेक्षण आंकड़ो से एक रोचक तथ्य सामने आया है कि विषेषज्ञों द्वारा पारिस्थितिकी, बस्ती, पहचान, भोजन पद्धति, सामाजिक संगठन, अर्थव्यवस्था, रोजगार, जुड़ाव और परिवर्तन तथा विकास से संबंद्ध 775 प्रमुख लक्षण समान हैं और ये धर्म की सीमा को लांघते हैं। उदाहरण के लिए हिन्दू के 96.77% लक्षण मुसलमानों से 91.19% लक्षण बौद्धों से, 88.99% लक्षण सिक्खों और 77.4% जैनियों से मिलते हैं। भाषा विविधता और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का एक प्रमुख स्त्रोत रही है। विविध भाषा परिवारों से निकली 325 भाषाएं और 25 लिपियां यहां मौजूद हैं। 65% समुदाय द्विभाषी हैं। अधिकांष जनजातीय समुदाय त्रिभाषी हैं और द्विभाषा संपर्क के कारण सामाजिक और सांस्कृतिक आदान प्रदान में काफी सहायता मिली है।

2.5.3 पितृसत्तात्मकता और नारी

हमारी सांस्कृतिक विरासत में नारी को बराबरी का स्थान प्राप्त नहीं है। यह उनके प्रति उदार नहीं रही है। संपूर्ण इतिहास में नारी अधीनता और सामाजिक षोषण पर मजबूत धार्मिक और सामाजिक मुहर लगाई गई हैं।

महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों में महिलाओं को ही दोषी माना जाता है और इसे समाज अस्वीकार भी नहीं करता है। आज भी यह स्थिति कायम है। महिलाओं के खिलाफ होने वाले अधिकांष अपराध जैसे सती प्रथा, लड़की षिषु की हत्या, बाल विवाह आदि की जड़े प्राचीन काल में निहित हैं और आधुनिक काल की असमानता ने इन जड़ो को और भी मजबूत बना दिया है।

प्राचीन काल के धार्मिक ग्रंथों में महिलाओं के प्रति अपषब्द और अवमानना युक्त वाक्य लिखे हुए हैं। उनकी तुलना षूद्रों के साथ की गई है और उन्हें भी धार्मिक समारोहों, षिक्षा और कई धर्म ग्रंथों से वंचित रखा गया। सती की पहली सूचना 6वीं षताब्दी ई. में मिलती है। सांस्कृतिक दृष्टि से सम्पन्न गुप्त काल में महिलाओं पर काफी कठोरता बरती जाती थी। जैसे जैसे अर्थव्यवस्था जटिल होती गई और श्रम विभाजन

कायम होने लगा वैसे–वैसे महिलाएं अधिनस्थ की भूमिका निभाने लगीं। उस समय के कानून को व्यक्त करने वाली मनुस्मृति महिलाओं के प्रति क्रूर है और यह लंबे समय तक महिलाओं की स्थिति का निर्णायक आधार बना रहा। यह स्थिति मध्यकाल और आरंभिक आधुनिक काल तक बनी रही। महिलाओं के षोषण के खिलाफ और सामाजिक समानता के लिए संघर्ष हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। 19वीं षताब्दी के सामाजिक सुधार आन्दोलन के दौरान सती और बाल विवाह प्रथा के खिलाफ और नारी षिक्षा के लिए आंदोजन चलाए गए। राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं के प्रवेष, स्वतंत्रता में उनकी समान भागीदारी ने नारी आन्दोलन के स्वरूप को भी बदल दिया। नारी आन्दोलन ने भारतीय पुनरुत्थानवादी प्रवृत्तियों के खिलाफ अपना विक्षोभ प्रकट किया और समाज में नारी की भूमिका को परिभाषित किया। महिलाओं की षिक्षा के लिए सबसे पहले पंडित रमाबाई ने अभियान छेड़ा और वे कांग्रेस अधिवेषन में जाने वाली पहली महिला थी।

1890 में जाकर महिलाओं को इन सत्रों में बोलने का अधिकार मिला। सरला देवी धोषाल, मैडम भीकाजी कामा, सरोजिनी नायडू, एनी बेसेंट, अरूणा आसफ अली, कमलादेवी चट्टोपाध्याय, लक्ष्मी सहगल जाने माने नाम हैं। नमक सत्याग्रह, क्रांतिकारी गतिविधियों, नागरिक अवज्ञा, भारत छोड़ो आन्दोलन, किसान आन्दोलन और तेलंगाना आन्दोलन में भी सभी वर्गो की महिलाओं ने हजारों की संख्या में हिस्सा लिया। कोई भी ऐसा राष्ट्रीय संघर्ष या आन्दोलन न रहा जिसमें महिलाओं ने हिस्सा न लिया हो। षिल्प, लोक सांस्कतिक रूप जैसे नृत्य संगीत, अर्थव्यवस्था सभी क्षेत्रों महिलाओं ने पुरुषों के साथ कंधा मिलाकर चलीं।

वस्तुतः महिलाओं ने हमारी सांस्कृतिक विरासत को जितना कुछ दिया उतना सम्मान और श्रेय उन्हें नहीं मिला।

2.5.4 समन्वयवादी परम्परा

मिश्रित संस्कृति भारतीय परम्परा की एक प्रमुख विषेषता रही है। आर्यों के भारत आगमन के साथ ही विभिन्न संस्कृतियों का मिलन आरंभ हो गया और लोक तथा अभिजात्य स्तरों पर संस्कृति नए रूप धरने

लगी। प्राचीन भारत के स्थापत्य, मूर्ति कला और चित्रकला में भारतीय–यूनानी षैलियों का मिश्रण देखा जा सकता है। मध्य युग में भारतीय–इस्लामी स्थापत्य षैली का विकास हुआ। इस काल में बने मकबरे और मस्जिद इसके प्रमाण हैं। संगीत के क्षेत्र में कव्वाली, तबला, सितार, खयाल आदि का विकास हुआ। उर्दू भाषा का विकास हुआ। इसमें साहित्य की रचना होने के साथ–साथ यह राजकाज का भी माध्यम बनी। यह भाषा हमारी समन्वयवादी परम्परा का अनुपम प्रतीक है। जनता के स्तर पर भक्ति और सूफी आन्दोलन चले। इन आन्दोलनों में सभी जातियों और समुदायों के लोग अनुयायी बनें; हालांकि भक्ति आन्दोलन में हिन्दुओं और सूफी में मुसलमान अनुयायियों की संख्या ज्यादा है। कबीर और दादू जैसे संतो ंके अनुयायी दोनों धर्मों से लगभग बराबर–बराबर हैं। आज भी सूफी संतों की याद में लगने वाले उर्स मेले में सभी समुदायों के लोग षामिल होते हैं। अजमेर, दिल्ली और अन्य स्थानों पर बने मजारों पर हर जाति और समुदाय के लोग जाते हैं। हमारी संस्कृति की समन्वयवादिता का एक बुरा असर यह हुआ कि जाति व्यवस्था, जो हमें विरासत के रूप में प्राप्त हुई है, लगभग सभी धर्मों के भारतीय समुदायों में मौजूद हैं।

2.5.5 धार्मिक सहिष्णुता

धार्मिक सहिष्णुता हमारी संस्कृति की एक और विषेषता है। प्राचीन काल से यह भावना चली आ रहा है और धार्मिक मुद्दों को हिंसा से नहीं बल्कि वाद विवाद से सुलझालय जाता रहा है। आर्यों द्वारा हड़प्पा सभ्यता और संस्कृति के ध्वंस का सिद्धांत गलत सिद्ध किया जा चुका है। अवषेषों और अन्य कई प्रमाणों से यह पता चला है कि आर्यजन और हड़प्पावासी एक साथ मौजूद थे। आर्यो ने पूजा की कई पद्धतियां हड़प्पावासियों से ग्रहण की हैं। षिवलिंग (षिव), सांड (गाय) और पीपल के प्रतीकों का प्रयोग हिन्दू धर्म के लिए किया जाता है। वस्तुतः वैदिक धर्म में, खासकर उत्तर वैदिक काल में, हड़प्पावासियों की पूजा पद्धति की कई विषेषताओं को अपना लिया गया।

जैन और बौद्ध अहिंसा आधारित धर्म हैं। इस उपमहाद्वीप में हजारों साल तक बौद्ध और हिन्दू धर्म एक साथ कायम रहे। बौद्ध षासकों के दरबार में हिन्दू भी होते थे और इसी प्रकार हिन्दू षासकों के दरबार में बौद्ध भी रहते थे।

हिन्दू धर्म के अनुयायियों ने कभी–कभी बौद्धों के खिलाफ हिंसा और दंड देने का रास्ता अपनाया। उदाहरण के लिए, मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद जब पुष्यमित्र षुग मगध का राजा बना तो कहा जाता है उसने एक बौद्ध भिक्षु का सिर लाने पर 100 स्वर्ण मुद्राएं देने की घोषणा की। दक्षिण भारत में परवर्ती कालों में भी इस प्रकार की दंडात्मक घटनाओं की सूचना मिलती है। परन्तु ये सब अपवाद हैं। गुप्त राजाओं ने कभी भी बौद्धों को दण्डित नहीं किया और उनके षासन काल में बौद्ध कला तेजी से विकसित होती रही। इसी प्रकार बौद्ध राजा हर्ष ने भी अपने राजकाज में हिन्दू धर्म और दर्षन को जगह दी। वस्तुतः वाद विवाद द्वारा लोगों के मतांतरण का ज्यादा प्रयास किया गया, इसके लिए हिंसा का प्रयोग कम ही हुआ।

भारत में इस्लाम के आगमन के आरंभिक वर्षों में जबरन धर्म परिवर्तन या मंदिरों तथा मूर्तियों को तोड़े जाने की कुछ सूचनाएं मिलती हैं। इस मामले में महमूद गजनी षायद सबसे ज्यादा बदनाम रहा है। लेकिन उसकी नजर धर्म से ज्यादा लूट से प्राप्त होने वाले माल पर थी। उसने बड़ी चालाकी से इस लूट को धर्म का आवरण दे दिया। वह भारत पर षासन करना चाहता था। कुछ तुर्की आक्रमणकारियों ने भी धार्मिक असहिष्णुता का प्रदर्षन किया परन्तु ऐसे उदाहरण कम हैं। एक बार भारत में बस जाने और यहां अपना षससन स्थापित कर लेने के बाद वे काफली हद तक हिन्दू और अन्य भारतीय विचार धाराओं और संवेदनाओं के प्रति सहिष्णु हो गए और उनमें भावनात्मक रूप से जुड़ गए। उन्होंने कभी भी धर्म परिवर्तन के लिए बल का प्रयोग नहीं किया।

मुगलों और खासकर अकबर ने धार्मिक सह–असितत्व और सहयोग के नए मापदण्ड स्थापित किए। उनके दीन–ए–इलाही में बिना किसी धार्मिक आवरण के सवोच्च ईष्वर की आराधना पर बल दिया गया। उसके उत्तराधिकारियों ने भी इसी मार्ग का पालन किया। आम धारणा यह है कि औरंगजेब में धार्मिक सहिष्णुता

नहीं थी परन्तु उसने भी कुछ अपवादों को छोड़कर धार्मिक सहिष्णुता की भारतीय परम्परा का ही पालान किया। आधुनिक युग में कुछ इलाकों में पुर्तगालियों क अपवाद को छोड़कर फ्रांसीसियों और अंग्रेजों ने धर्म परिवर्तन नहीं किया। वस्तुतः 1857 के विद्राह के बाद अंग्रेजों ने भारत में कार्यरत निजी मिषनरियों पर भी कड़ाई से प्रतिबंध लगाया।

भारतीय इतिहास के संपूर्ण दौर में धर्म परिवर्तन में बल की अपेक्षा सहमति ज्यादा महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हिन्दू धर्म की कठोर धार्मिक प्रथाएं और निम्न जातियों के साथ भेदभाव इसका प्रमुख कारण रहा है। लेकिन इस मामले में कुछ अपवाद भी रहे हैं। परन्तु वे बहुत की कम हैं।

2.5.6 अभिजात्य और जन संस्कृति की परम्पराएं

अभिजात्य और जन परम्पराओं ने मिलकर भारतीय संस्कृति को समृद्ध किया है। कलिदास की कविताएं और पाणिनि के व्याकरण के साथ साथा कबीर के दोहे और बाउल के लोक नृत्य हमारी सांस्कृतिक विरासत के हिस्से हैं। परन्तू राष्ट्रीय सांस्कृतिक विरासत में इस जन संस्कृति के योगदान को नजरअंदाज करने या इसे आभिजात्य संस्कृति से ढकने की कोषिष की जाती है। वस्तुतः जनसंस्कृति ने देष को ऊपर उठाने और उसे एक सूत्र में जोड़े रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। भक्ति और सूफी आन्दोलन इसके उत्तम उदाहरण हैं। हमें यह याद रखना चाहिए कि कत्थक कल, मधुबनी चित्र कला, पांडवानी, नौटंकी, कलिचेरी–पट्टु, डांडी नृत्य, राजस्थान को लोक संगीत, खुर्जा के मिट्टी के बर्तन, बंधिनिकला, पट्ट चित्र, परंपरागत खिलौने आदि सौंदर्य और सुख का सृजन होने के साथ–साथ सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां भी है। वस्तुतः यह हमारे राष्ट्र का समृद्ध बनाते हैं। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि हमारे देष की भव्य स्थापत्यगत संरचनाएं मजदूरों के खून–पसीने की देने हैं और आभिजात्य संस्कृति की अभिव्यक्तियों की नींव जनता के षोषण पर आधारित है। भारत के जाने मान उत्सवों का आधार किसान, खेती और वहां का जीवन है।

बोध प्रश्न 4

1) भारतीय संस्कृति की समन्वयवादी विषेषता के कुछ उदाहरण प्रस्तुत कीजिए।

_____

_____

2) भारतीय नुषास्त्रीय सर्वेक्षण आंकड़े पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

_____

_____

3) भारत में धार्मिक सहिष्णुता की परम्परा पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।

_____

_____

2.6 सारांश

इस इकाई में हमने उत्तर मध्यकाल, आधुनिक और समकालीन युगों में संस्कृति के ऐतिहासिक विकास पर विचार विमर्ष किया है। हमने गौर किया कि इस विकास की प्रक्रिया के दौरान हमने बाहर का काफी कुछ आत्मसात किया। इस प्रक्रिया से नए रूप और सामने आए और इसने हमारी सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध बनाया।

इस काल में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी काफी प्रगति हुई। इससे भी संस्कृति के विकास में मदद मिली।

हमने संस्कृति की कुछ खास विषेषताओं पर विचार विमर्ष कियास। मसलन, आत्मसातीकरण, समनवयवादी परम्परा और धार्मिक सह अस्तित्व। हमने यह भी गौर किया कि हमारी सांस्कृतिक विविधाता में भी एकता है। इस इकाई में हमने भारतीय संस्कृति में महिलाओं की भूमिका और हैसियत का भी जिक्र किया है।

भारत में आधुनिक संस्कृति के निर्माण में धर्मनिरपेक्षता, प्रजातंत्र और वैज्ञानिक रुझान की महत्वपूर्ण भमिका की ओर भी आपका ध्यान आकृष्ट किया गया है।

2.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) i) ख v) च

ii) छ vi) क

iii) घ vii) क

iv) ड

बोध प्रश्न 2

1) नारी समानता, भारतीय समाज में सुधार, षोषित जातियों का उत्थान आदि कुछ प्रमुख चिन्ताएं थी। देखिए उपभाग 2.2.2।

2) आप बंगाल, महाराष्ट्र या दक्षिण भारतीय राज्यों के प्रमुख सुधार आन्दोलनों का उल्लेख कर सकते हैं। देखिए उपभाग 2.2.2।

3) स्वाधीन भारत में भारतीय संविधान ने आधुनिक संस्कृति के लिए प्रजातंत्र, धर्मनिरपेक्षता, समानता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता आदि का आधार तैयार किया। देखित उपभाग 2.2.3।

बोध प्रश्न 3

1) देखिए उपभाग 2.3।

2) वस्त्र प्रौद्योगिकी, पानी निकालने के तरीके और भवन सामग्री तथा सैनिक प्रौद्योगिकी कुछ ऐसे क्षेत्र हैं। देखिए भाग 2.3।

3) देखिए भाग 2.4।

बोध प्रश्न 4

1) देखिए उपभाग 2.5.1।

2) देखित उपभाग 2.5.2।

3) देखिए उपभाग 2.5.5 ।2

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY